कैदी नंबर 724

वह चौंक गया , सर आपकी रिहाई का आदेश आया है , कल सुबह सभी फारमेल्टी के बाद आप घर जा सकते हैं ।

अजीब सा कैदी था यह, इनकम टैक्स पेई था सो अलग बैरक में एक साफ सुथरा कमरा मिला था उसे। लड़ाई न झगड़ा न झंझट किसी से कुछ कहना सुनना नहीं सिर्फ और सिर्फ एक खामोशी।

वह जो पांच महीने से कुछ नहीं बोला था उसने आंख उठाई , मैं रिहाई नहीं चाहता।

आदेश सुनाने वाला सिपाही कुछ नहीं बोला मुड़ कर जाने लगा , वह क्या जवाब दे सकता था। तभी वह जोर से चीखा मैं रिहाई नहीं चाहता।

अजीब शख्स है जब वह यहां लाया गया था तो उसने कहा था यह फैसला गलत है किसी दिन तुम्हें रुला देगा _____और न जाने कौन सा नाम देर तक बुदबुदाता रहा था वह।

आज फिर जैसे वह कुछ बुदबुदा रहा था जो उसके अलावा किसी को सुनाई नहीं दिया।

तेजी से निकल कर खबर सुना ड्यूटी पर लौटे सिपाही ने जेलर साहिबा को उसकी बात बताई मैडम बड़ी मुश्किल है कैदी नंबर सात सौ चौबीस सिरफिरा लगता है वह कह रहा है मुझे रिहाई नहीं चाहिए।

सिमरन जी सोच में पड़ गईं उन्हें अपने कैरियर में पहली बार जेल का चार्ज मिला था और वे जेल को भी एक माडल जेल में बदलना चाहती थीं। उन्हें पता था कि अपराध एक पर्टीकुलर मेंटल स्टेज की क्षणिक परिणति है। आवेश के एक क्षण के गुजर जाने के बाद कोई भी अपराधी एक बिल्कुल अलग एक दूसरा आदमीं होता है। ठीक वैसे ही जैसे लाखों सफेद पोश अपराधी जेल के बाहर घूमते हैं लेकिन पकड़े नहीं जाते।

वैसे भी समाज की धारणा में अपराधी का अर्थ है या तो इसने खून किया है , डकैती डाली है या करोड़ों का गबन कर के जेल में सजा भुगत रहा है।

लेकिन नहीं इस कैदी पर न तो गबन और n ही मर्डर का इल्जाम है।

इसकी सजा भी तो बस दो साल थी , तीन महीने यह लॉक अप में बिता चुका था और आज यह सजा हुए अट्ठाईसवां दिन है और इसकी रिहाई के आदेश आ गए हैं।

अजीब सा केस आया था अदालत के समने सजा होते ही एक हफ्ते के भीतर इस पर आरोप लगाने वाली युवती ने एफिडेविट दे कर कोर्ट में अपने आरोप वापस लिए थे उसकी रिहाई की मांग की थी।

उनके सामने सवाल यह था कि बाइज्जत बरी हुआ शख्स आखिर रिहाई क्यों नहीं चाहता।

आज ही तो उन्होंने गजल सुनी थी

"गम बढ़े आते हैं कातिल की निगाहों की तरह,

मुझको ऐ दोस्त छुपा लो तुम अपनी निगाहों की तरह। "

"अपनी आंखों में गुनहगार न होते क्यूं कर,

दिल ही दुश्मन था मुखालिफ के गवाहों की तरह।"

ऐसे कैदियों को समझना बड़ा मुश्किल होता है कोई नहीं जानता कि ये कब क्या कर बैठें।

उन्हें डर लगा कहीं ये आज रात सुसाइड न कर ले ।

उन्होने उस कैदी की पूरी फाईल पढ़ी और उस से मिलने का फैसला किया । शाम सात बजे   वो बैरक के बाहर खड़ी थीं । वह बेहद शांति से अपनी बैरक में घुटनों में सिर दबाये बैठा था । कुछ देर देखने के बाद वे बोलीं रामेश्वर जी चाय पीयेंगे। अचानक उसने अपना सिर उठाया , जैसे आस पास के हालात से तारतम्य बैठा रहा हो । उसने धीरे से कहा मैडम आपने क्यों तकलीफ की मैंने बता तो दिया था कि मुझे रिहाई नहीं चाहिए ।

वे मुस्कुराईं रामेश्वर जी मैं आपसे रिहाए नहीं चाय की बात करने आई हूँ । आप सोच रहे होंगे मैं आपसे क्यों बात कर रही हूँ । दरअसल मैं कैदी नंबर सात सौ चौबीस से नहीं केरल कैडर के क्लास वन सेक्रेटरी रामेश्वर दयाल जी से बात करने आई हूँ ।

रामेश्वर जी की आँखें नम हो गईं, मैं जानता हूँ कि आप पहली महिला पी सी एस आफिसर हैं और मैं दिल में आपकी बहुत इज्जत करता हूँ । सच तो यह है कि आपके इस जेल को ज्वाईन करने के बाद ही आपको देखने की इच्छा थी लेकिन -- एक कैदी ---

मैं समझ सकती हूँ , लेकिन अब आप कैदी नहीं हैं कोर्ट के आर्डर के साथ ही आपके ऊपर लगे सभी इल्जाम हट चुके हैं और आप सेक्रेटरी रामेश्वर दयाल हैं ।

उसकी आँखों से आँसू बह निकले उसने अपने शर्ट की आस्तीन से अपने आंसू पोंछे । थैंक्स मैडम आपने मुझे गुनहगार नहीं समझा ।

रामेश्वर जी मैं यहाँ किसी भी कैदी को गुनहगार नहीं समझती , सच तो यह है कि जिस लम्हे में गुनाह होता है उस लम्हे के गुजर जाने के बाद एक गुनहगार भी हमारी और आपकी तरह एक आम आदमी होता है । हम सब विभिन्न परिस्थितियों में सुबह से शाम तक न जाने कितने गुनाह करते हैं लेकिन हमारी कांशस उस गुनाह को हकीकत में बदलने से पहले ही रोक लेती है । जीवन की तमाम परिस्थितियों में हम वैचारिक गुनाह के दौर से गुजर रहे होते हैं । ठीक इसके विपरीत यहाँ कैद न जाने कितने कैदी बेगुनाह हैं जो अपनी बेगुनाही साबित न कर पाने के कारण सजा काट रहे हैं मैं अपने जीवन में ऐसे हजारों कैदियों से बात कर चुकी हूँ जिन्हें मैंने फूट फूट कर रोते देखा है जिनकी आँखों में बेगुनाह होने के सबूत छुपे थे लेकिन कानून ने उन्हें परिस्थिति जन्य साक्ष्य के आधार पर उम्र कैद की सजा सुना दी थी । वे बताते हैं कि कैसे असली अपराधी ने उसे फंसा कर खुद को बेगुनाह साबित कराया था ।

खैर जाने दीजिये मैं तो बस जिज्ञासा वश आपसे मिलने आ गई कल आपको रिहा होना है और कोर्ट के आदेश के बाद हम आपको रख भी नहीं सकते , मैंने सोचा कल मुलाक़ात हो न हो आज मिल लेते हैं ।

चाय आ गई थी । उन्होने जेल के हिसाब से ही एक छोटे से तिपाए का इंतजाम कर दिया था जिस पर चाय बिस्किट रखे थे । रामेश्वर खुद को इस वार्तालाप के बाद कुछ बेहतर महसूस कर रहे थे ।

चाय पीते पीते उन्होने कहा सर आप बुरा न मानें तो मैं आपके द्वारा हकीकत सुनना चाहती हूँ , मैं कैदियों के जीवन पर एक किताब लिख रही हूँ जिसमें उनके जीवन के सच्चे घटनाक्रम की दास्तान हैं , आप मुझे अपनी दोस्त समझ कर बताना चाहें तो मेरे ऊपर बहुत बड़ा अहसान होगा । इतना ही कह सकती हूँ कि जिसने आपके खिलाफ केस किया था उसी ने केस वापस ले कर आपके रिहाई की मांग की है इसलिए आप अपराधी नहीं हैं हो सके तो मुझे यहाँ तक के सफर के बारे में बताईये कल आप जा रहे हैं और कोर्ट से बेगुनाही का प्रमाण मिलने के बाद आप अपनी पोजीशन पर दुबारा ज्वाईन कर लें यह मेरी प्राथमिकता रहेगी और हाँ जैसा कि आपने कहा आप रिहाई नहीं चाहते तो मेरा आपसे निवेदन होगा कि आप अपनी ज्वाईनिग तक जेल के साथ ही लगी मेरी कोठी के अतिथि गृह में रहें । वह भी इस जेल का हिस्सा है जिसे मैंने अलग से तैयार कराया है उन केस के लिए जिनमें कोर्ट के आदेश के बाद भी रिहाई में देर होती है ।

थोड़ी देर खामोश रहने के बाद मैडम बेदी उठने लगीं चलती हूँ लगता है आप बताना नहीं चाहते मैं आपको इस मामले में फोर्स नहीं करना चाहती बस इतनी सी बात थी कि आपके जीवन की घटना से बहुत से लोग सबक ले कर खुद को सुधार सकते हैं इसलिए मैं यहाँ आई थी बाकी कल सुबह आप यहाँ से निकल कर गेस्ट हाउस में आ रहे हैं अपनी ज्वाईनिग तक वहाँ रहने के लिए ।

वे उठने लगी तो एक बार फिर रामेश्वर दयाल ने अपने आँसू पोंछे , मैडम मैं आपको मना नहीं कर सकता , लेकिन आपके सामने मेरी जुबान नहीं खुल रही है । उन्होने पूरे स्टाफ को जाने के लिए कहा । अब बैरक में सिर्फ

दो लोग थे । रामेश्वर जी ने पानी से मुंह धोया और दीवार की तरफ फेस कर के बैठ गए । मैडम मैं आपसे अपने दिल की बात कहता हूँ , आपको जो ठीक लगे वह आप आपने हिसाब से कैदियों की किताब में लिख दीजिएगा । मुझे पता है कि आपने मेरे केस फाईल पढ़ी होगी । केस फाईल कागजों की किताब होती है दिल की किताब नहीं । दिल की किताब तो चेहरे और आँखों से पढ़ी जाती है । यह बात कोई पाँच साल पुरानी है जब सुनिधि ने आफिस ज्वाईन किया था । न जाने कब और किसे मैं दिल ही दिल में सुनिधी से प्यार कर बैठा । बस यहीं पाज़ बनाता है, इंसान के दिल को नहीं पता होता कि क्या गलत और क्या सही है । गलत और सही का फैसला समाज , परिस्थिति और इंसान के तर्क में छुपा होता है । यह जो प्यार है यह तर्क नहीं जानता । प्यार हो जाना जिंदगी में एक अजीब सी घटना है इसे सिर्फ वही जानता है जिसे प्यार होता है बाकी के लिए प्यार की परिभाषाएँ होती हैं । इसे समझ पाना शायद असंभव है ।

मेरे दिल ने कई बार सोचा और कहा " क्या दोस्त तुम्हें प्यार भी होना था तो इस उम्र में इस लड़की से , आखिर क्या है इसमें जो तुम इसे दिल दे बैठे , मैं सुनिधि से प्यार का इजहार नहीं कर सकता था लेकिन बॉडी लैंगवेज़ से प्यार जताने लगा । न जाने क्यों मुझे सुनिधि के चेहरे और आँखों की भाषा में अपने लिए कहीं न कहीं कुछ नजर आया । खैर प्यार की परिभाषा बड़ी अलग है । प्यार मुझे हुआ किसी और को हुआ कि नहीं यह कहाँ मायने रखता है । मैं दिल ही दिल में इस प्यार में डूबता रहा , इस प्यार में मैं कुछ इस कदर खो गया कि मुझे सुबह शाम की खबर न रही । कुछ इस तरह कि -

तुझे क्या सुनाऊँ मैं दिल रुबा तेरे सामने मेरा हाल है ,
तेरी एक निगाह की बात है ,मेरी जिंदगी का सवाल है ।
पड़ी जब से तुझ पे मेरी नजर , मुझे सुबह शाम की क्या खबर ,
मेरी सुबह है तेरी जुस्तजू , मेरी शाम तेरा खयाल है ।

एक बात बड़ी मजबूत थी इस प्यार में कि यह एक रूहानी प्यार था सिर्फ जज्बाती । दिमाग , सर्विस और मेरी उम्र के साथ ही मेरी परिस्थितियों ने साफ कह दिया था कि तुम जिंदगी में जो भी सोचो जज़्बात से आगे नहीं बढ़ोगे । किसी के लिए मीठे जज़्बात रखना कोई गुनाह नहीं है । इस प्यार में मैं भी तो बस किसी और दुनियाँ में जीने लगा था । सब कुछ ऐसे ही चलता रहता , कि इस एहसास में न जाने कब वैचारिक रूप में शरीर आ गया । सच तो यह है कि मैंने सुनिधी को कभी छूआ ही नहीं लेकिन न जाने कब कैसे किन परिस्थितियों में उसे सामाजिक रूप से प्रतिबंधित मैसेज भेज बैठा । उसके बाद की कहानी केस फाईल में हैं । भावनात्मक रूप से जब प्यार है तो वह शरीर का बंधन नहीं मानता चाहे विचार में ही क्यो न हो । न जाने कितने वैचारिक अपराध होते हैं लेकिन लिखे नहीं जाते । मैं सुनिधी को प्यार करता हूँ , करता था और करता रहूँगा । प्यार क्या है इसे सिर्फ मैं जानता हूँ इसके लिए मुझे उम्र कैद भी मिले तो मैं स्वीकार कर लूँगा । मैं सफाई देने नहीं उतारा हूँ बस प्यार के एहसास को बताने बैठा हूँ । केस फाईल रूल रेगुलेशन देखती है दिल और आंखो की भाषा नहीं , कागजों की भाषा में जो कुछ मिला वह मुझे यहाँ तक लाने के लिए काफी था और मैं यहाँ आज आपके सामने बैठा हूँ , लेकिन मुझे पता था कि जिस दिन सुनिधि दिल की आँख से देखेगी मुझे गुनहगार न कह सकेगी और यही हुआ कि मुझे सजा होंने के बाद पूरी प्रोसेडिंग को बदलते हुये उसने कोर्ट में अपना केस वापस ले लिया है । मेरी मुश्किल सिर्फ इतनी है कि एक बार किसी पर कैदी का ठप्पा लग जाए तो समाज उसे हमेशा शक की निगाह से देखता है । मैं यहाँ से निकल कर कहाँ जाऊंगा । अपने घर परिवार में क्या मुंह दिखाऊँगा । मैडम मैं रिहाई नहीं चाहता यहाँ से रिहा होने से अच्छा है मैं अपनी जिंदगी से रिहा हो जाऊँ । इतना कह कर रामेश्वर दयाल चुप हो गए उनके आँखों से लगातार आंसू बह रहे थे , वे कह रहे थे मैं अपनी सजा बढ़वाना चाहता हूँ प्लीज मुझे रिहा मत करिए रिहा हो कर मैं जी नहीं सकूँगा ।

रामेश्वर जी यदि आपको मुझ पर भरोसा है तो मुझे सिर्फ एक दिन दीजिये मैं सुनिश्चित करूंगी कि आपकी बेगुनाही समाज के सामने आए ।

मैं बेगुनाह नहीं हूँ प्लीज मुझे अपनी सजा पूरी करने दीजिये । रामेश्वर जी बोले ।

खैर अपनी बात कह कर जैसे वे हल्के हो गए थे और मैडम बेदी ने उन्हें विश्वास दिला दिया था कि वे रामेश्वर दयाल को सामाजिक रूप से बेगुनाह साबित करेंगी जिस से वे रात होते ही गहरी नींद में सो चुके थे ।

सुबह ग्यारह बजे प्रेस कान्फ्रेंस हो रही थी , रामेश्वर दयाल को लेने उनकी पूरी फैमिली आई थी और साथ ही सुनिधि भी अपने पति के साथ खड़ी थी । रामेश्वर जी जैसे ही अपना टोकन दे कर बाहर निकले यह नजारा देख कर हतप्रभ रह गए । सुनिधि के पति ने रामेश्वर जी को गले लगाते हुये कहा आपको सजा होंने के बाद जब सुनिधि ने आपके भावनात्मक लगाव की बात कही तो मेरे आँखों में आँसू आ गए । न जाने कितनी एक्ट्रेस और सेलिब्रिटी हैं जिनसे आज लोग अपने भावनात्मक लगाव का इजहार कर अपनी जिंदगी जीते हैं , मुझे लगा हमें भी सही और गलत का फैसला आज बदलते परिवेश में कागज की किताब से नहीं दिल की किताब से करना होगा । सुनिधि ने जब आपका केस वापस लिया तो एफ़िडेविट फाईल करने मैं भी साथ गया था । मुझे सुनिधि से प्यार है हाँ अब मेरे उसके लिए मेरे प्यार का दायरा और बढ़ गया है । पूरा परिवार जैसे रामेश्वर दयाल के साथ खड़ा था , भावनात्मक लगाव कोई गुनाह नहीं है अगर वो किसी को ज़िंदगी जीने की प्रेरणा दे । उधर प्रेस कान्फ्रेंस में मैडम बेदी की तारीफ हो रही थी कि कैसे उनके कार्यकाल में किसी इंसान को खाली जेल से ही रिहाई नहीं मिली बल्कि कैदी रिहा हो कर अपने जीवन के गिल्ट कांशस से भी मुक्त हो जाता है । रामेश्वर दयाल सिर झुकाये बाहर निकल रहे थे उनकी निगाह एक बार फिर सुनिधि पर थी , जैसे कह रहे हों थैंक्स तुम्हारा हर फैसला मुझे मंजूर है । इस से बढ़ कर मुझ से प्यार जताने का तरीका क्या होगा ?